10

बपतिस्मा जो हमें योग्य बनाता है

''और जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था, तो पौलुस ऊपर के सारे देश से होकर इफिसुस में आया, और कई चेलों को देखकर ... उनसे कहा; तो फिर तुम ने किस का बपतिस्मा लिया? उन्होंने कहा; यूहन्ना का बपतिस्मा। पौलुस ने कहा; यूहन्ना ने यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया, कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर अर्थात यीशु पर विश्वास करना। यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा लिया'' (प्रेरितों 19:1-5)।

एक बार जब नई वाचा का बपतिस्मा लागू होने के बाद तैयारी का अर्थात यूहन्ना का बपतिस्मा पर्याप्त नहीं था। उन लोगों में यूहन्ना का बपतिस्मा लेने वालों में से कम से कम कुछ ने यीशु मसीह के नाम में दोबारा बपतिस्मा लिया था, जो कि स्पष्टत: पापों की क्षमा पाकर उसके राज्य में प्रवेश करने के लिए यीशु को मसीह के रूप में मानने की उनकी एक अभिव्यक्ति है (प्रेरितों 19:1-5)। यूहन्ना का बपतिस्मा अब पर्याप्त नहीं रहा गया था; इसलिए, स्पष्ट है कि किसी भी बपतिस्मे को नई वाचा का वह *एक* बपतिस्मा नहीं कहा जा सकता था (इफिसियों 4:5)। हमें ऐसे बपतिस्मे पर निर्भर नहीं रहना चाहिए जो नई वाचा की शर्तों को पूरा नहीं करता हो, बल्कि नई वाचा का बपतिस्मा लेने के लिए दोबारा बपतिस्मा लेना आवश्यक है।

नई वाचा के बपतिस्मे का प्रचार यीशु (इब्रानियों 9:15-17), जो नई वाचा का मध्यस्थ है (इब्रानियों 12:24), की मृत्यु से व्यवहार में आने के बाद शुरू हुआ था। पुरानी वाचा, जो नई वाचा की स्थापना के लिए बीच में से उठा ली गई थी (इब्रानियों 10:9), यूहन्ना, यीशु (मत्ती 15:24) और प्रेरितों (मत्ती 10:5, 6) के *तैयारी के काम* की तरह *इस्राएल जाति के लिए* थी (निर्गमन 34:28, 29; 1 राजा 8:9, 21; व्यवस्था 5:1-5)।

बपतिस्मे से पहले क्या होना चाहिए?

शिक्षा

नई वाचा का बपतिस्मा, बेशक यूहन्ना के बपतिस्मे जैसा ही था (लूका 3:3-13) परन्तु इसमें काफी अन्तर थे। यह बपतिस्मा सुसमाचार से सम्बन्धित निर्देश से पहले होना था (मरकुस 16:15, 16)। इसे लेने वालों ने यीशु के बारे में सीखा था (प्रेरितों 2:37, 41; 8:14; 11:1; 16:14; 18:8; 19:5)।

यीशु में विश्वास

बपतिस्मा लेने से पहले (मरकुस 16:16; प्रेरितों 8:12; 18:8; 19:4, 5) यीशु में विश्वास करना आवश्यक है जो वचन केसिखाने से आता (यूहन्ना 17:20; 20:30, 31; प्रेरितों 15:7; 17:11; रोमियों 10:17)। बिना विश्वास के, मनुष्य का कोई कार्य परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता है (यूहन्ना 8:24; इब्रानियों 11:6)। *विश्वास* जो उद्धार का कारण बनता है वह प्रभु और मसीह के रूप में यीशु में (रोमियों 10:9; 1 यूहन्ना 5:1), उसके पुनरुत्थान में (रोमियों 10:9), और उसके लहू में (रोमियों 3:25; 5:9) *विश्वास* है। इस विश्वास के बिना बपतिस्मा लेने वाला सूखे पापी के रूप में पानी में जाएगा और गीला पापी बनकर बाहर आ जाएगा।

पश्चात्ताप

पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने उन यहूदियों को जिनके विश्वास ने उन्हें यह पूछने के लिए मजबूर कर दिया था कि क्या करें, मन फिराने और पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लेने को कहा था (प्रेरितों 2:38)। पश्चात्ताप सोच में बदलाव को कहा जाता है जो व्यक्ति के जीवन को बदल देता है (मत्ती 3:8; प्रेरितों 3:19; 26:20)।

मन के पछतावे, खेद और उदासी को पश्चात्ताप नहीं कहा जाता है; परन्तु ऐसी भावनाएं किसी को पश्चात्ताप की ओर ले जा सकती हैं (2 कुरिन्थियों 7:8, 9)। पश्चात्ताप वह *बिन्दु* है जहां से व्यक्ति अपने जीवन को बदलने का निश्चय करता है। बपतिस्मा उस निर्णय पर मुहर लगाना है (रोमियों 6:4)। बपतिस्मा दिखाए गए स्थान पर हस्ताक्षर करना है या यूं कहें कि यीशु के लिए नया जीवन जीने की वचनबद्धता पर मुहर लगाना है।

अंगीकार

प्रत्यक्ष रूप से बपतिस्मे के साथ अंगीकार का सम्बन्ध केवल एक ही पद अर्थात प्रेरितों 8:37 में मिलता है। इस आयत के विषय में ह्यूगो मेकॉर्ड ने लिखा:

> [कुछ प्रारम्भिक लेखों] से आयत 37 की अनुपस्थिति शास्त्र के अधिकतर आलोचकों के लिए इस पद को नकारने का कारण बनती है। अतिप्राचीन हस्तलेख

> जिसमें यह मिलती है छठी शताब्दी [से] है और यह दूसरी शताब्दी के लातीनी हस्तलेखों में और दूसरी शताब्दी के इरेनियुस में मिलती है। दूसरी ओर, आन्तरिक प्रमाण इसकी रोक के पक्ष में है, क्योंकि इसके त्याग से एक अप्रत्याशित दरार पड़ जाती है। इथोपिया केअधिकारी ने फिलिप्पुस से यह पूछकर कि उसके बपतिस्मा लेने में क्या रुकावट है, बिना उसके उत्तर की प्रतीक्षा किए, बपतिस्मा लेने के लिए तैयार होकर रथ खड़ा कर दिया। इस आयत को शामिल करना इससे जुड़ा हुआ है। इसके अलावा प्रेरितों 8:37 का अंगीकार नये नियम के दूसरे आंकड़े के साथ भी मेल खाता है (रोम. 10:9, 10; फिलिप. 2:11; 1 तीमु. 6:13; 1 यू. 4:15)।[1]

विश्वास करने और बपतिस्मा लेने की तरह ही (मरकुस 16:16) प्रभु के रूप में यीशु का अंगीकार करना (रोमियों 10:9) भी उद्धार के लिए पूर्व शर्त है। किसी को कैसे पता चलेगा कि वह एक विश्वासी को बपतिस्मा दे रहा है जब तक कि उसने यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार न किया हो?

अनिश्चित भूतकाल सम्भाव्य *omologeses* (''अंगीकार,'' रोमियों 10:9) के साथ *ean* (''यदि'') की यूनानी रचना उद्धार पाने के लिए एक बार अंगीकार का सुझाव देती है। राबर्ट डब्ल्यू. फंक ने, *ए ग्रीक ग्रामर ऑफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट* में अनिश्चित भूतकाल सम्भाव्य का वर्णन ''punctiliar, ingressive, complexive'' के रूप में किया है, जिसका अर्थ है कि अनिश्चित भूतकाल सम्भाव्य लम्बा, देर तक रहने वाला या जारी रहने वाला कार्य नहीं, बल्कि एक ही बार का कार्य है। बपतिस्मे से पहले, व्यक्ति को *एक* बार यह अंगीकार करना आवश्यक है कि यीशु प्रभु है।

बिसले-मुर्रे ने रोमियों 10:9 के साथ ''यीशु प्रभु है'' के अंगीकार को ठीक ही जोड़ा है। यह अंगीकार बपतिस्मा लेने की इच्छा करने वाले के होंठों पर होता है। उसने लिखा है कि मत्ती 28:18 और दानिय्येल 7:13, 14 के बीच सम्बन्ध को ''बपतिस्मा लेने वाले द्वारा यह विश्वास करके कि परमेश्वर ने उसे मुर्दों में से जिला दिया है, 'यीशु प्रभु है' का सीधा सा अंगीकार मान लिया जाता है।''[2]

बाद में, रोमियों 10:9, 10 के बारे में उसने लिखा:

> यहां यह स्पष्ट है कि विश्वास धार्मिकता पाने के उद्देश्य के लिए या परिणाम के साथ प्रभु की ओर निर्देशित है, और अंगीकार उद्धार पाने या उसके प्रभाव के लिए किया जाता है, दान दिए जाने के समय का उल्लेख नहीं है पर ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है, प्रभु की ओर मुड़कर विश्वास को वह अनुग्रह वैसे ही मिलता है जैसे बपतिस्मे के समय अंगीकार को परमेश्वर का उद्धार।[3]

इस चर्चा की बात करते हुए उसने लिखा:

> हम स्मरण करते हैं कि रोमियों 10:9 में सुसमाचार का वाक्य ''यीशु प्रभु है'' के बपतिस्मे के अंगीकार को मिला लेता है। मानवीय पक्ष से बपतिस्मा प्रभु के रूप में

यीशु में विश्वास का अंगीकार, उसकी मृत्यु तथा पुनरुत्थान में सहभागी होने और प्रभु द्वारा उसके छुटकारे से लाए गए असीम अनुग्रह को विश्वास से अपनाने की प्रसन्नतापूर्ण प्रतिबद्धता है। बपतिस्मे में सुसमाचार का प्रचार तथा विश्वास का सुनना एक चिरस्थाई कार्य में एक ही समय में अनुग्रह और विश्वास के कार्य अर्थात परमेश्वर और मनुष्य के कार्य में एक हो जाता है।[4]

जी उठे प्रभु में विश्वास प्रभु के रूप में यीशु का अंगीकार करने और यीशु के नाम से बपतिस्मा लेकर गाड़े जाने और जी उठने की क्रिया दोनों से व्यक्त किया जाता है।

क्या शिशुओं का बपतिस्मा होना चाहिए?

नई वाचा में, बपतिस्मा लेने के लिए वही व्यक्ति तैयार होता है जिसे सुसमाचार के विषय में सिखाया गया हो, वह अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु के लहू में विश्वास करता हो, यीशु के लिए नया जीवन जीने के लिए समर्पण कर रहा हो, तथा उसने यीशु में जी उठे प्रभु और मसीह के रूप में अपने विश्वास का अंगीकार कर लिया हो। शिशु इन शर्तों को पूरा करने के योग्य नहीं होते हैं।

पहली बात, शिशु पापी नहीं होते हैं। उन्हें नैतिक और आत्मिक सिद्धांतों की भी कोई जानकारी नहीं है (व्यवस्थाविवरण 1:39; यशायाह 7:16) इसलिए वे पापी नहीं हैं (यूहन्ना 9:41)। उन पर अपने माता-पिता के पाप के दोष का आरोप नहीं है, क्योंकि हर कोई अपने ही कामों से धर्मी अथवा दुष्ट ठहराया जाता है (यहेजकेल 18:20)। स्वर्ग का राज्य उन्हीं लोगों के लिए है जो छोटे बच्चों की नाईं हैं (मत्ती 19:14)।

दूसरी बात, जिन आयतों का यह प्रमाणित करने के लिए इस्तेमाल किया गया है कि शिशुओं का जन्म मूल पाप के साथ होता है या तो उनका दुरुपयोग किया गया है या गलत ढंग से अनुवाद। भजन 51:5 के मूल अनुवाद में कहा गया है, ''देख, मैं अधर्म में उत्पन्न हुआ, और पाप में मेरी माता ने मुझे गर्भ में लिया।''[5] कुछ अपवादों को छोड़कर (देखिए NIV और RSV, जिसमें मूल पाप की शिक्षा के पद का अनुवाद किया गया है) लगभग सभी अनुवाद इससे सहमत हैं। दाऊद अपने जन्मोपरान्त की स्थिति पर टिप्पणी *नहीं* कर रहा था बल्कि उस वातावरण पर दुखी हो रहा था जिसमें वह पैदा हुआ था। इस आयत में यह *नहीं* कहा गया कि दाऊद जन्म से पापी था।

एक कवि के रूप में, दाऊद ने अपनी शिकायत उस व्यक्ति की तरह की जो कह सकता है, ''मैं भयानक सर्दी में गर्भ में आया, और मौन्टेना में बर्फीले तूफान में पैदा हुआ; हैरानी की बात नहीं है कि मैं इस अप्रिय मौसम में रहता हूं।'' ऐसे वाक्य का अर्थ यह नहीं होगा कि उसे लगता था कि वह जन्म से ही बर्फ का टुकड़ा था, बल्कि यह उस अवांछनीय वातावरण के बारे में व्यक्तिगत विलाप था जिसमें उसे रहना पड़ रहा था।

लेसली एस. मॅक्काअ ने कहा था, ''इसका अर्थ यह नहीं कि गर्भधारण के शारीरिक कार्य के पाप में होने के कारण उसे पापपूर्ण स्वभाव दिया गया था। इस आयत का इतना ही अर्थ है कि मनुष्य जाति के सदस्य होने के तथ्य के कारण हम पाप की वास्तविकता में बड़े

ही जटिल ढंग से उलझे हुए हैं।''[6]

आदम और हव्वा का पाप मृत्यु, जन्म देने में पीड़ा, श्रापित पृथ्वी और भले और बुरे के ज्ञान का कारण तो बना (उत्पत्ति 3:1-22), परन्तु उनका यह दोष और बिगड़ा स्वभाव उनकी संतान की विरासत *नहीं बना।* उसी प्रकार, जैसे कोई बच्चा किसी बलात्कारी के परिणाम तो भोग सकता है, परन्तु उस आक्रमण के कारण वह दोषी नहीं होता, वैसे ही हमने भी आदम और हव्वा के पाप के *परिणाम* तो भोगे हैं, परन्तु हम पर उनके पाप का *दोष* नहीं है। न्याय के दिन हर किसी को अपने ही कामों का हिसाब देना होगा (2 कुरिन्थियों 5:10)।

भलाई और बुराई के ज्ञान से उनके स्वभाव में कोई बिगाड़ नहीं हुआ था, क्योंकि परमेश्वर ने टिप्पणी की, ''मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है'' (उत्पत्ति 3:22)। निश्चय ही कोई यह नहीं कहेगा कि भले और बुरे के ज्ञान ने परमेश्वर के स्वभाव को बिगाड़ दिया है। ऐसे ज्ञान से मनुष्य को नैतिकता को चुनने की स्वतन्त्रता मिलती है (यशायाह 7:16), यह एक ऐसी ज़िम्मेदारी है जिसे मनुष्य आत्मसंतुष्टि की अपनी इच्छा और शैतान द्वारा प्रस्तुत लोभ के कारण पूरा नहीं कर पाता है।

तीसरी बात, शिशुओं को आत्माओं के पिता (इब्रानियों 12:9) परमेश्वर से आत्मा मिलता है (सभोपदेशक 12:7; जकर्याह 12:1)। संसार में आने वाले किसी व्यक्ति को परमेश्वर बुरी आत्मा नहीं देता, क्योंकि परमेश्वर बुराई का स्रोत नहीं है।

चौथी बात, बाइबल में शिशुओं के बपतिस्मे का कोई उदाहरण नहीं मिलता है। पूरे परिवार के बपतिस्मे कोई अपवाद नहीं हैं। विश्वास करने और बपतिस्मा लेने वाले, ''पुरुष और स्त्रियां'' (प्रेरितों 8:12) थे, ऐसा वाक्यांश है जिसमें शिशु शामिल नहीं होंगे।

बाइबल में प्रयुक्त शब्द ''घर'' या ''घराना'' में सामान्यत: वयस्कों को शामिल किया जाता था, बच्चों को नहीं। ध्यान दें कि यूसुफ ने इस्राएल के लोगों ''और अपने-अपने बाल-बच्चों और घर के और लोगों ...'' (उत्पत्ति 47:24) के लिए भोजन छोड़ दिया। जहां भी कहीं ''घर'' या ''घराना'' लोगों की एक इकाई का नाम लेता है, संदर्भ स्पष्ट संकेत देता है कि वहां शिशुओं को शामिल नहीं किया गया था (यूहन्ना 4:53; फिलिप्पियों 4:22; तीतुस 1:11; इब्रानियों 11:7), क्योंकि शिशु मानसिक तौर पर इन आयतों में वर्णित बातों के अयोग्य होते हैं।

घरानों के मसीही बनने के हवालों में भी यही बात सत्य है:

1. पतरस से सीखकर (प्रेरितों 2:14-36) इस्राएल के घराने ने (प्रेरितों 2:36), पूछा कि वे क्या करें (प्रेरितों 2:37), उन्हें बताया गया कि मन फिराएं और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लें (प्रेरितों 2:38)। उन्होंने वचन को ग्रहण किया और बपतिस्मा लिया। शिशुओं में कोई पाप नहीं होता जिसके लिए उन्हें क्षमा किया जाए और वे इस पद की मांग के अनुसार उनकी बातों को नहीं मान सकते थे, इसलिए उन्हें प्रेरितों 2:41 के बपतिस्मों में शामिल नहीं किया गया होगा।

2. कुरनेलियुस का घराना परमेश्वर से डरता था (प्रेरितों 10:2), संदेश सुनने के लिए उपस्थित था (प्रेरितों 10:33), उसने वचन ग्रहण किया (प्रेरितों 11:1), उन्होंने भांति-भांति

की भाषाएं बोलीं (प्रेरितों 10:44-46), और उसे बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी गई थी (प्रेरितों 10:48)। शिशुओं को इन कार्यों में शामिल नहीं किया गया होगा।

3. लुदिया के घराने को ''उसका घराना'' और ''मेरा घर'' कहा गया है (प्रेरितों 16:15), जो संकेत देता है कि उसका पति नहीं था। वरना वह ''हमारा'' घर कहती। इसका कोई प्रमाण नहीं दिया जा सकता कि वह विवाहित थी या उसके बच्चे थे।

4. पौलुस ने फिलिप्पी दरोगे के घर के सारे लोगों को प्रभु का वचन सुनाया था (प्रेरितों 16:32)। बपतिस्मा लेने के बाद, उन्होंने विश्वास करके आनन्द किया (प्रेरितों 16:34)। परन्तु शिशु विश्वास करके आनन्द करने में भाग नहीं ले सकते थे।

5. क्रिस्पुस और उसके *सारे घराने ने प्रभु पर विश्वास किया* (प्रेरितों 18:8)। शिशुओं में प्रभु पर विश्वास करने की योग्यता नहीं होती इसलिए क्रिस्पुस के घराने में बपतिस्मा लेने वालों में उन्हें शामिल नहीं किया गया होगा (1 कुरिन्थियों 1:14)।

6. पौलुस ने स्तिफनास के घराने को बपतिस्मा दिया था (1 कुरिन्थियों 1:16)। इस घराने ने भी मसीही लोगों की सेवा की थी (1 कुरिन्थियों 16:15), जो कि एक ऐसा कार्य था जिसे शिशुओं के लिए करना असम्भव होगा।

घरानों के बपतिस्मों के आधार पर शिशुओं के बपतिस्मे का तर्क केवल कल्पना ही लगता है। शिशुओं का बपतिस्मा नई वाचा के बपतिस्मे की तरह मान्य नहीं है, क्योंकि शिशुओं में कोई ऐसा पाप ही नहीं है जिसे क्षमा किया जाए (प्रेरितों 2:38; 22:16) और वे नई वाचा के बपतिस्मे की पूर्व शर्तों को पूरा करने की योग्यता भी नहीं रखते हैं।

क्या खतने और बपतिस्मे में समानता है?

कई लोगों ने यह कहते हुए कि बपतिस्मा और खतना एक ही बात है जिससे बच्चों को परमेश्वर के साथ वाचा के सम्बन्ध में पक्का किया जाता है, शिशुओं के बपतिस्मे पर तर्क दिया गया है। बाइबल में खतने और बपतिस्मे में तुलना की गई है, उन्हें समान नहीं बताया गया है। खतना एक मुहर या इस चिह्न के रूप में कि याहवेह उसका परमेश्वर है (उत्पत्ति 17:7-11) *जन्म के आठ दिन बाद* नर बालक का किया जाता था (लैव्यव्यवस्था 12:3) जबकि बपतिस्मा आत्मिक जन्म है जो किसी को परमेश्वर की संतान बनाता है (यूहन्ना 3:3-5; गलतियों 3:26, 27)। फिर परमेश्वर उसे पवित्र आत्मा का दान देकर अपना होने की *मुहर लगाता है* (2 कुरिन्थियों 1:22; गलतियों 4:6; इफिसियों 1:13, 14; प्रेरितों 2:38)। बपतिस्मे की तुलना खतने से की जाती है क्योंकि खतने में मूल अर्थ में मांस उतारा जाता है, जबकि बपतिस्मे में सांकेतिक अर्थ में (कुलुस्सियों 2:11, 12)। इस समानता का अर्थ यह नहीं है कि बपतिस्मा खतने के समानान्तर है। बेशक जिस प्रकार खतने में मांस की परत उतारी जाती है वैसे ही मन से आज्ञा मानने पर लिया गया बपतिस्मा व्यक्ति के शारीरिक अतीत को मिटा देता है, परन्तु वह ऐसा कार्य अपने आप *नहीं* करता, बल्कि परमेश्वर के कार्य से होता है। बपतिस्मा आत्मिक जन्म है जो आत्मिक जीवन को बदल देता है, जबकि खतना शारीरिक जन्म के बाद केवल एक छोटा सा शारीरिक बदलाव है।

जन्म के कारण ही इस्राएली परमेश्वर की वाचा के लोग बने और उन पर खतने से मुहर की गई; बपतिस्मा हमें परमेश्वर की वाचा के लोग बनाता है और हम पर पवित्र आत्मा से मुहर की जाती है। पुराने नियम की शारीरिक वास्तविकताएं नये नियम की आत्मिक वास्तविकताओं के अलंकार या प्रतिरूप थे। इसलिए बाइबल खतने की मुहर के बाद *शारीरिक जन्म* को बपतिस्मे के द्वारा पाए गए *आत्मिक जन्म* और पवित्र आत्मा के दान की मुहर के समानान्तर प्रस्तुत करती है। बपतिस्मा और खतना समानान्तर *नहीं हैं*; बल्कि जन्म बपतिस्मा है और खतना आत्मा की मुहर के समानान्तर है।

बपतिस्मे की क्रिया क्या है?

एक और विचार है कि बपतिस्मा छिड़काव से, उंडेलकर, या डुबकी देकर होता है। अधिकतर विद्वान सहमत हैं कि यूनानी शब्द *बेपटिज़ो* का अर्थ डुबोना है। शब्दकोष तथा विश्वकोष जो धार्मिक विचार की पूर्व धारणा से परे हैं, ''बपतिस्मे'' की व्युत्पत्ति (विकासात्मक इतिहास) में एक मन से कहते हैं कि अंग्रेज़ी लिप्यान्तरण ''बेपटाइज़'' मध्य अंग्रेज़ी *बेपटिज़्न* से, पुराने फ्रांसीसी शब्द *बेपटाइज़र* से, बाद के लातीनी *बेपटिज़रे* से, यूनानी *बेपटिज़ेन* से विकसित हुआ है जिसका अर्थ ''डुबोना'' है।

बहुत से संस्करणों में जहां लिप्यान्तरण ''बेपटाइज़'' का इस्तेमाल नहीं होता, वहां ''डुबोना'' शब्द के साथ यूनानी शब्द *बपटिज़ो* का अनुवाद किया गया है। यूनानी शब्दकोषों में ''डुबोना'' का अर्थ अंग्रेज़ी में ''बेपटाइज़'' दिया जाता है।[7]

बेपटिज़ो का अर्थ निर्धारित करने का एक अच्छा ढंग नये नियम में इसके इस्तेमाल पर विचार करना है। इसके अर्थ के रूप में संदर्भ *डुबकी* के पक्ष में ही हैं। यूहन्ना लोगों के पास पानी नहीं लाया; बल्कि लोग उससे बपतिस्मा लेने के लिए यरदन नदी पर आए थे (मत्ती 3:6)। उसने बपतिस्मा देने के लिए वह स्थान चुना जहां बहुत अधिक जल था (यूहन्ना 3:23)। नये नियम में वर्णित बपतिस्मों में लोग पानी के पास आए, पानी के भीतर गए और पानी से ऊपर आए (मत्ती 3:16; मरकुस 1:10; प्रेरितों 8:38, 39)। यदि जल का छिड़काव या उंडेलना बपतिस्मे के रूप में मान्य होता तो उन्हें ऐसा कष्ट उठाने की आवश्यकता नहीं थी।

पौलुस ने बपतिस्मे की तुलना यीशु के गाड़े जाने और जी उठने से की है (रोमियों 6:4; कुलुस्सियों 2:12)। जल का छिड़काव और उंडेला जाना यीशु के गाड़े जाने और पुनरुत्थान को नहीं दर्शाता है। बाइबल के *कन्क्रेटिरनिटी* अनुवाद में रोमियों 6:4 के लिए कहा गया है, ''संत पौलुस मूल कलीसिया में पाए जाने वाले बपतिस्मे के सामान्य ढंग, डुबकी का संकेत देता है। पानी के भीतर जाना देह के कब्र के भीतर जाने का और पानी से ऊपर आना नये जीवन के लिए जी उठने का सुझाव देता है। स्पष्टत: संत पौलुस बपतिस्मे के संस्कार में इससे अधिक देखता है।''[8]

जरुसलेम बाइबल के नये नियम में एक पाद टिप्पणी में रोमियों 6:3–9 पर टिप्पणी दी गई है, ''पापी को जल में डुबोया जाता है ('बपतिस्मे' का विकासात्मक अर्थ है 'डुबोना')।''[9]

कुछ लोगों के लिए, यह कोई बड़ी बात नहीं कि बपतिस्मे में डुबोना शामिल है या

उंडेलना या फिर छिड़काव। लेकिन, क्या पता कि परमेश्वर छिड़काव या जल के उंडेलने को बपतिस्मे का एक रूप मान ले जबकि इस बपतिस्मे का स्पष्ट अर्थ डुबोना है? शायद यहां यीशु की एक बात लागू होती है: ''जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है, वह बहुत में भी सच्चा है: और जो थोड़े से थोड़े में अधर्मी है, वह बहुत में भी अधर्मी है'' (लूका 16:10)। यदि कोई उस बात को बदलना चाहता है जिसे वह छोटी बात समझता है, तो यदि उसके विश्वास से बाइबल की कोई और शिक्षा मेल न खाए तो वह उसके साथ क्या करेगा? (देखिए मत्ती 5:19)।

बपतिस्मा कौन दे सकता है?

बपतिस्मे का प्रभावी होना इसे देने वाले के व्यवहार या उसकी आत्मिक स्थिति पर निर्भर नहीं करता है। यदि ऐसा होता, तो बपतिस्मा लेने वाले को कभी पता नहीं चलेगा कि उसके पाप क्षमा हो गए हैं या नहीं। बपतिस्मा देने वाले की योग्यताओं के बारे में भी कुछ नहीं बताया गया है। इसके बजाय, शास्त्र में बपतिस्मा लेने वाले द्वारा उसे समझना और उसके समर्पण को अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। इसका लाभ लेने के लिए, बपतिस्मा लेने वाले के लिए हृदय से मानना आवश्यक है (रोमियों 6:17, 18)।

विश्वास और परमेश्वर के प्रति समर्पण से आने वाला व्यक्ति मसीही बन जाएगा और नये जीवन में प्रवेश कर लेगा चाहे उसे बपतिस्मा देने वाले की आत्मिक स्थिति या व्यवहार कैसा भी क्यों न हो। यदि यह सत्य नहीं है, तो परमेश्वर ने उद्धार बपतिस्मा लेने वाले पर आधारित ही नहीं बल्कि बपतिस्मा देने वाले पर भी बनाया है, जो कि ऐसी शिक्षा है जो परमेश्वर के वचन में नहीं मिलती।

सारांश

धार्मिक जगत में बपतिस्मा कहे जाने वाला प्रत्येक काम नई वाचा का बपतिस्मा नहीं है (इफिसियों 4:5)। बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए यीशु के लहू में विश्वास रखकर हृदय से आज्ञा मानना है। इसमें पिछले पापों से मरने और यीशु के लिए नया जीवन जीने की वचनबद्धता शामिल है। कोई भी शिक्षा जो बपतिस्मे को परमेश्वर की बिना सोचे-समझे आज्ञा मानना बना देती है वह बपतिस्मे के मूल्य को बहुत ही गिरा देती है और इसे एक खोखला संस्कार बनाकर यीशु के लहू में विश्वास रखकर बपतिस्मे की क्रिया से और इसके साथ जुड़ी हुई जीवन बदलने वाली वचनबद्धता से दूर कर देती है। यीशु के साथ बपतिस्मे में गाड़े जाने वालों के लिए अपने पापों को मिटाने की इच्छा होनी आवश्यक है ताकि वे नए प्रभु अर्थात यीशु मसीह की सेवा के लिए एक नया जीवन जी सकें। जिन्होंने इस प्रकार अपने जीवनों को समर्पित नहीं किया है उन्हें नई वाचा का बपतिस्मा लेकर जो कि एक ही सही बपतिस्मा है, उसकी बात मान लेनी चाहिए।

पाद टिप्पणियां

[1]ह्युगो मेकोर्ड, न्यू टैस्टामेन्ट (हैन्डरसन, टैनि.: फ्रीड हार्डमैन कॉलेज, 1988), 520. [2]जी. आर. बिसले मुर्रे, *बैपटिज्म इन द न्यू टैस्टामेन्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशि.: Wm. B. ईरडमैन्स पब्लिशिंग कं., 1977), 87. [3]वहीं, 103. [4]वहीं, 272. [5]जेय पी. बतीन, *ए लिटरल ट्रांसलेशन ऑफ़ द बाइबल* (पी बॉडी, मास.: हैन्डरिक्सन पब्लिशर्ज़, 1987), 495. [6]फ्रांसिस डेविडसन, ऐलन एस. स्टिब्स, एण्ड अर्नेस्ट फ्रैड्रिक केवन, *द न्यू बाइबल कमैन्टरी* (ग्रैण्ड रैपिड्स, मिशि.: Wm. B. ईर्डमैन्स पब्लिशिंग कं., 1954), 448. [7]देखिए ए. ओपके, *थियोलिजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट,* ed. गर्हड किट्टल, अनु. व सम्पा. ज्योफरी डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैण्ड रैपिड्स, मिशि.: Wm. B. ईर्डमैन्स पब्लिशिंग कं., 1964), 1:545 में ''*bapto*''; वाल्टर बाऊर, ए ग्रीक इंग्लिश लैक्सीकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट एण्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर, 2d ed., rev. विलियम डब्ल्यू. अर्न्डट, एफ़. विल्बर गिन्गरिच, एण्ड फ्रैड्रिक डब्ल्यू डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1979), 131. [8]कन्फ्रेटरनिटी ट्रांसलेशन ऑफ़ द बाइबल, सेंट जोसेफ़ ed. (न्यूयार्क: कैथोलिक बुक पब्लिशिंग कं., 1963), 163. [9]*द न्यू टैस्टामेन्ट ऑफ़ द जरुसलेम बाइबल* (गार्जन सिटी, N.Y.: डबलडे एण्ड कं. 1966), 177.